जैविक विधि द्वारा टमाटर की उन्नत खेती

[1]अनीता केरकेट्टा, एवं [2]विजय बहादुर
[1]उद्यान विभाग शुआट्स, प्रयागराज
[2]उद्यान विभाग शुआट्स, प्रयागराज

पत्राचारकर्ता : vijaybahadur2007@gmail.com

परिचय - कार्बनिक/ जैविक खेती

देश में हरित क्रांति के पूर्व कृषि व्यवस्था कार्बनिक एवं जैविक पद्धतियो पर आधारित थी परन्तु हरित क्रांति के फलस्वरूप अधिक उपज देने वाजी प्रजातियो के साथ - साथ रासायनिक उर्वरको, कीटनाशको, फफूँदनाशको, खरपतवार नाशको आदि का प्रयोग बेतहाशा प्रारम्भ हो गया। यहाँ तक कि पूर्णतया प्रतिबंधित रसायनो का प्रयोग आज भी किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप मृदा, पानी, हवा आदि प्रदूषित हो रही है। रासायनिक उर्वरक के प्रयोग से सब्जियों के उत्पादन में आशातीत सफलता तो मिली परन्तु सब्जियों की गुणवत्ता तथा मिट्टी की उत्पादकता में कमी आयी है। इसका मुख्य कारण जरूरत से ज्यादा रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता तथा कार्बनिक खादों का प्रयोग कम होने से पौधों को संतुलित मात्रा में पोषक तत्व उपलब्ध नहीं हो पा रहा है।

यह कटु सत्य है कि अन्य कृषि फसलो की तुलना में सब्जियो में कृषि रसायनो का प्रयोग सबसे अधिक मात्रा में किया जा रहा है। पूरे वर्ष सब्जियों की उपलब्धता बनाये रखने के लिए उत्पादको द्वारा बे-मौसिमी सब्जियो की खेती में भी ज्यादा कृषि रसायनो का प्रयोग किया जा रहा है, क्योंकि अगेती व पिछेती सब्जियो की खेती में रोग एवं कीड़ो का प्रकोप ज्यादा रहता है। इतना ही नही ज्यादा समय तक सब्जियों को ताजा एवं उनमें चमक बनाये रखने के लिए भी हानिकारक रसायनो का प्रयोग प्रचलन में है। कार्बनिक ढंग से उत्पादित सब्जियाँ ज्यादा पोषकीय गुणों से भरपूर होती है और उपभोक्ता के लिए ज्यादा सुरक्षित एवं बाजार मूल्य भी ज्यादा मिलता है।

जैविक सब्जी क्या है

''ऐसी सब्जी उपज जो वातावरण के प्रति मित्रवत उत्पादन, प्रबंधन पद्धतियो एवं निर्देशन से प्राप्त होती है, जैविक सब्जी कहलाती है।''

जैविक विधि द्वारा टमाटर की उन्नत खेती से लाभ

विश्व मे भारत सब्जी में उत्पादक दूसरा बड़ा देश है जहाँ लगभग 14.9 लाख मिलियन टन सब्जी की पैदावार प्रति वर्ष होती है परन्तु प्रति व्यक्ति इनकी उपलब्धता बहुत कम है। यदि उन्नत उत्पादन प्रौद्योगिकी अपनाकर प्रति इकाई सब्जी उत्पादन बढ़ाया जाय तो प्रति व्यक्ति सब्जी की उपलब्धता बढ़ाने के साथ-साथ संतुलित आहार की पूर्ति भी की जा सकती है।

भारतवर्ष में सभी स्थानो पर टमाटर का सब्जियों में एक महत्वपूर्ण स्थान है। पके हुए टमाटर को सब्जी के अलावा फल की तरह भी प्रयोग किया जाता है। इसकी खेती हर जगह की जाती है। इसमे प्रमुख विटामिन 'ए', विटामिन 'सी' मैलिक एसिड, साइट्रिक एसिड, पोटेशियम, लोहा एवं फॉस्फोरस प्रचुर मात्रा में पाये जाते है। इसका उपभोग सलाद के रूप में भी किया जाता है तथा इसके अलावा इससे टोमेटो कैचप, सॉस इत्यादि चीजो को बनाने में भी प्रयोग किया जाता है।

बहु उपयोगी तथा गुणवत्ता से भरपूर टमाटर की कार्बनिक विधि द्वारा उत्पादन को बढ़ावा देना चाहिये। जिससे रसायनिक रहित सब्जियों उपभोक्ता को मिल सके और उसका उचित मूल्य किसानो के परिवार के आमदनी को बढ़ा सके।

टमाटर वैज्ञानिक रूप से सोलेनम एस्कुलेन्टम मिलर, सोलेनेसी कुल के अन्तर्गत आता है और इसकी गुणसूत्र संख्या $2n = 24$ होती है। टमाटर एक महत्वपूर्ण सब्जी है, जिसका सब्जी जगत में आलू तथा शकरकन्द के बाद तीसरा स्थान आता है। डिब्बो में भरने वाली सब्जियो में टमाटर का स्थान प्रथम है। भारत में इसकी खेती लगभग 4.86 लाख हे0 भूमि में की जाती है, जिससे लगभग 74.2 लाख टन टमाटर का वार्षिक उत्पादन होता है। जिनमें मुख्यतः उ0 प्र0, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, हरियाणा, पंजाब बिहार और गुजरात सबसे अग्रणी है। इसकी खेती आय का एक अच्छा स्रोत है। मुख्यतया गर्मियो के मौसम में या अभाव के समय टमाटर ऊँचे

दाम पर बिकता है। इसकी अगेती व देर से फसल लेने में अधिक लाभ होता है।

पोषकीय महत्व

टमाटर के फल स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभदायक है, क्योंकि इसमें पर्याप्त मात्रा में विटामिन ए 900 अ0 ई0, विटामिन सी 27 मि0 ग्राम विटामिन बी खनिज लवण, शर्करा तथा प्रोटीन भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। टमाटर में बीटा कैरोटिन कम होता है, जबकि लाइकोपीन जो एक प्रमुख एन्टीआक्सीडेन्ट व एन्टी कैंसर गुण रखता है अधिक होता है। टमाटर मे लाइकोपीन 8.8 - 42.0 मिली ग्राम प्रति 100 ग्राम फल भार में होता है। (राव एवं सत , 2007)

जलवायु एवं मृदा

टमाटर उष्ण कटिबन्धीय जलवायु की फसल है जो सामान्यतः 10 - 30 डिग्री सेलिसयस तापक्रम पर उगता है। यह फसल पाले के साथ - साथ निम्न तापक्रम को सहन नहीं कर सकती है। अगर उच्च तापक्रम, निम्न आर्द्रता एवं सूखी हवा बनी रहे तो अपरिपक्व फूल तेंजी से गिरने लगते है, जिससे कम फल मिलते है। अधिक और निम्न तापक्रम दोनो का फल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फलो में अच्छी प्रकार लाल रंग विकसित होने के लिए 15 - 25 डिग्री सेल्सियस तापक्रम उत्तम होता है। टमाटर सभी प्रकार के मिट्टी में अच्छी तरह से उगायी जा सकती है लेकिन अधिक उपज के लिए दोमट मृदा सर्वोत्तम मानी जाती है। मृदा का पी. एच. मान औसत 4.5 - 7 होना चाहिए।

किस्में-

आनुवांशिकता के आधार पर प्रजातियों को शुद्ध वंशक्रमों तथा शंकर पौध बढ़वार के अनुसार सीमित, मध्यम और असीमित समूहों मे ंबाँटा जा सकता है-

1 असीमित बढ़वार-इन किस्मों के पौधों की बढ़वार रुकती नहीं तथा पौधे बड़े होते हैं। दो गाँठों के बीच (फूलों के बीच) गुच्छे कम निकलते हैं, लेकिन फूल व फल अधिक समय तक आते रहते हैं। इन किस्मों के फल बड़े होते हैं तथा इनमें फल सड़न की बीमारी कम लगती है।

2 सीमित बढ़वार-सीमित बढवार वाली किस्मों में पौधे की वृद्धि फूल की कली के रूप में समाप्त होती है। सीमित किस्मों में कटाई-छटाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। अतः इसे स्व-कृन्तन किस्म भी कहते है। इन किस्मों के पौधे बौने होते हैं।

उन्नत शील किस्में

1 काशी विशेष-इस प्रजाति को वर्ष 2006 में उत्ताराखंड, जम्मू एव ंकश्मीर, हिमाचलप्रदेश, उत्तरप्रदेश,छत्तीसगढ़ बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं केरल राज्य में व्यवसायिक खेती के लिए अनुमोदित किया गया है। इसमें टमाटर का पर्ण मरोड़ बीमारी नहीं लगती है। इसकी औसत उपज 42.5 टन प्रति हेक्टेयर है।

2. पूसा अर्ली ड्वार्फ- यह सीमित बढ़वार वाली अगेती किस्म है। इसकी औसत उपज 35.0 से 37.5 टन प्रति हेक्टेयर तक हो जाती है। इसको दोनों मौसमों (शरद एवं वसंत) में उगाया जा सकता है।

3. पूसा सदाबहार-इस किस्म के पौधे सीमित बढ़वार वाले होते हैं। पौधों पर ज्यादा फल लगते हैं, जो अण्डाकार से गोलाकार होते हैं। फल छोटे, चिकने तथा आकर्षक होते हैं। इसकी औसत उपज क्षमता 25.0-35.0 टन प्रति हेक्टेयर होती है।

4. हिसार अरुण- 7-इस किस्म को उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में अगेती तथा मुख्य फसल के रुप में बहुतायत से उगाया जाता है। इस किस्म से औसत उपज 35.0 टन प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है।

5 हिसार ललितः- यह किस्म जड़ गाँठ सूत्रकृमी के प्रतिसहिष्णु होते है। इसके फल मध्यम आकार के गोल व लाल होते हैं। इसकी औसत उपज 30.0 प्रतिहेक्टेयर है।

6 पंजाब छुहाराः-इसके फल मध्यम आकार वाले नासपाती जैसे होते हैं तथा प्रति पौधा फल अधिक लगते हैं। फलों का छिलका मोटा होता है, इसलिए इसे दूर बाजार में भेजा जा सकता है। यह पिछेती पकने वाली किस्म है।इसकी औसत उपज 25.0-28.0 प्रति हेक्टेयर होती है।

7. पंत टमाटर- 1-यह अधिक पैदावार देने वाली किस्म गर्मी तथा सर्दी मौसम में उगाने के लिए उपयुक्त है। यह किस्म टमाटर मोजेक विषाणु के प्रति संवेदनशील है। इसकी औसत ऊपज 28.0-32.0 टन प्रति हेक्टेयर है।

1. भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी द्वारा विकसित किस्में- इस संस्था द्वारा काशी अनुपम काशी अमृत, काशी हेमन्त, काशी शरद को विकसित किया गया है।

2 भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान,नई दिल्ली, द्वारा विकसित किस्में-इस संस्था द्वारा पूसा रूबी, पूसा रेड प्लम, पूसा सेलेक्शन- 120, एस0एल0- 152, बेस्ट ऑफ ऑल पूसा गौरव, पूसा शीतल, पूसा उपहार, पूसा संकर-1, पूसा संकर-2, पूसा संकर-4, पूसा दिव्या को विकसित किया गया है।

3. चौधरीचरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार द्वारा विकसित किर्स्मे- इस संस्था द्वारा एच0 एस0- 101, एच0 एस0- 102 ,एच0 एस0- 110, हिसारलालिमा, , हिसार, अनमोल सेलेक्शन- 32, हिसारकलिंगा को विकसित किया गया है।

4. पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा विकसित किस्में-इस संस्था द्वारा पंजाब केशरी, एस- 12, पंजाब उपमा, टी0एच0 3212, टी0 एच 0802, टी0 एच 01 को विकसित किया गया है।

5. गोविंदबल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा विकसित किस्मे-इस संस्था द्वारा पंतबहार पंत टमाटर-2, पंत टी-3 को विकसित किया गया है।

6. चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश) से विकसित किस्में- इस संस्था द्वारा कल्याणपुर अंगूर लता, के0 एस02 को विकसित किया गया है।

7. भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान बेंगलुरु कर्नाटक द्वारा विकसित किस्में-इस संस्था द्वारा अर्का विकास, अर्का सौरभ, अर्का आभा, अर्का आलोक, अर्का मेघाली, अर्का विशाल, अर्का वरदान, अर्का आहूती, अर्का अभिजित, अर्का श्रेष्ठ को विकसित किया गया है।

8. नरेन्द्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उत्तर प्रदेश) से विकसित-इस संस्था द्वारा किस्मे-एन0 डी0 टी0-120, एन0 डी0 टी0-108 को विकसित किया गया है।

9. यशवन्त सिंह परमार उद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन हिमाचल प्रदेश द्वारा विकसित किस्में-इस संस्था द्वारा सोलन गोला, सोलन बज्र या यशवन्त, यशवन्त (ए-2), सोलन शगुन, पालम पिंक, पालम प्राईड को विकसित किया गया है।

10. व्यक्तिगत बीज कंपनियों द्वारा विकसित किस्में- अविनाश-इस संस्था द्वारा 2, रुपाली, नवीन, रश्मि, वैशाली को विकसित किया गया है।

11. अन्य शोध संस्थानों से विकसित किस्में-इस संस्था द्वारा जवाहर जवाहर-99, स्वर्ण नवीन, स्वर्ण लालीमा, ए0 आर0 टी0 एच0-3 को विकसित किया गया है।

बीज की मात्रा - एक हे0 जमीन से टमाटर की पौध लगाने के लिए लगभग 350 - 450 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। लेकिन वैज्ञानिक तरीके से खेती करने के लिए मात्र 200 - 250 बीज ग्राम पर्याप्त है।

पौध तैयार करना - टमाटर के पौध दो मौसमो में वर्षा एवं शरद ऋतु में तैयार किये जाते है। एक हे0 पौध रोपण के लिए लगभग 100 - 125 वर्ग मी0 क्षेत्रफल में पौधशाला लगाने की आवश्यकता पड़ती है। जिस भूमि में पौधशाला बनानी हो उसकी कई बार अच्छी प्रकार जुताई करके खतपतवार निकाल दिया जाता है। चयनित जगह को गर्मी में सौरीकरण (Solarization) आवश्यक है। जैविक विधि द्वारा खेत तैयार करने के लिए गोबर की अच्छी प्रकार सड़ी खाद मिलाकर सिंचाई कर दी जाती है। जब मिट्टी गुड़ाई के योग्य हो जाये तब गुड़ाई करके भुरभुरी बना ली जाती है। इस प्रकार तैयार भूमि में 15 - 20 से0 मी0 ऊँची क्यारियाँ बना दी जाती है। इन क्यारियों की ल0 5 मी0 तथा चौ0 1 मी0 रखी जाती है जिससे आसानी से सिंचाई व निकाई की जा सकें। क्यारियों में 1.5 से0 मी0 की दूरी पर बीच लगाना चाहिए। इसके बाद गोबर की अच्छी सड़ी खाद या वर्मी कम्पोस्ट को भूरभूरी करके उसकी एक पतली तह से बीज को ढक कर हर ओर से सिंचाई कर दी जाती है। जून - जुलाई में पौधो को अधिक तापक्रम एवं धूप से बचाने के लिए पौधशाला को दिन में पुआल से ढक कर छाया की जाती है तथा रात में हटा दिया जाता है। वर्षा के प्रभाव से बचने के लिए पॉलीथीन की चादर से ढकना चाहिए लेकिन ध्यान रहे कि पौधो की ज्यादा गर्मी न लगे। पौधे उगते समय सिंचाई पर अधिक ध्यान देना चाहिए, क्योंकि नमी की कमी होने तथा अधिक गर्मी पडने पर पौधे सूखने लगते है। बीज को बोने से पूर्व 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से थाईरम

पौध की रोपण का समय, विधि एवं अन्तरण

पौध तैयार करने का समय	रोपण का समय	फल मिलने का समय
जून - जुलाई	जुलाई - अगस्त	सितम्बर - अक्टूबर
नवम्बर - दिसम्बर	जनवरी - फरवरी	मार्च - अप्रैल

या कैप्टान से उपचारित कर लेते हैं।

रोपाई-पौधे को उखाड़ने से पूर्व पौधशाला की हल्की सिंचाई करनी चाहिए ताकि पौधे जड़ सहित सुगमता से उखड़ सकें। पौध की रोपाई तैयार खेत में पंक्तियों में की जाती है।

बैनी बढ़वार-

पौधो की आपसी दूरी 45 - 50 से0मी0

कतार से कतार की दूरी 60 - 75 से0मी0

ऊँची बढ़वार वाली किस्मों में पौधो एवं कतार की दूरी 90 × 30 से0मी0 रखी जाती है।

पोषक तत्व प्रबंधन

जैविक खाद एवं उर्वरक-

टमाटर की फसल में पोषक तत्वों की उचित मात्रा देने से अधिक पैदावार मिलती है। इन पोषक तत्वों में नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटाश अधिक महत्वपूर्ण है। इनकी प्रयोग मात्रा, स्थान तथा भूमि में इन तत्वो की, उपलब्ध मात्रा के उपर निर्भर करती है।

30 - 35 टन गोबर की सडी खाद प्रति0 हे0

120 : 56 : 50 किग्रा नाइट्रोजन : फास्फोरस एवं पोटाश

घरों में कोयला व लकड़ी जलाकर खाना बनाने से जो राख मिलती है वह जैविक खेती में पौधों के विकास के लिए उपयोगी होता है। इसमे सबसे ज्यादा पोटाश तत्व पाया जाता है, जिससे पौधों का विकास ज्यादा होता है और पौधों पर विकसित हो रहे फूलों व फलों का रंग चमकदार करता है।

गोबर की खाद ना केवल मृदा संरचना व जल धारण क्षमता में वृद्धि नहीं करती बल्कि जमीन के अंदर रहने वाले जीवो को भोजन व संरक्षण प्रदान करता है।

वर्मीकम्पोस्ट में ज्यादा पोषक तत्व पाया जाता है, जो केंचुओ से सड़कर 6 - 7 महीने में तैयार होता है। यह मृदा ताप क्रम नियंत्रित करता है।

ध्यान रहे कि जैविक खेती में केवल जैविक खादों द्वारा पौधो को पोषक तत्व प्रदान की जाये।

पौध लगाने के उपरांत की जानी वाली सस्य क्रियाएँ-

1. **सिचांई जल प्रबंधन -** सिंचाई की मात्रा मौसम, भूमि तथा पौधो की अवस्था के ऊपर निर्भर करती है। टमाटर को अपेक्षाकृत कम पानी की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई पौध लगाने के तुरन्त बाद की जाती है। सर्दियों में 10 - 15 दिन और गर्मियों में 5 - 6 के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए।

2. **खरपतवार प्रबंधन** - टमाटर के खेत से खरपतवार निकालना आवश्यक है क्योंकि इनके रहने से अनेक कीड़ो तथा बीमारियों का प्रकोप फसल पर होने की सम्भावना होती है। जिससे पैदावार में कमी हो जाती है। ध्यान रहे कि कार्बनिक विधि में रसायनिक दवाओ का प्रयोग न के बराबर होना चाहिए और खरपतवार की हाथ से हल्की निकाई करके निकालते है।

3. **जैविक पलवार-**इसके अन्तर्गत सामान्यतः भूसा (गेहूं, धान, मटर, सरसों आदि) पुआल (धान), पत्ती (आम, नीम, महुआ, पीपल), घास (जिसमें बीज न हो), हरी वनस्पतियां (अनुपयोगी) लकड़ी का बुरादा, घरों से निकली राख, गोबर की खाद, कम्पोस्ट, भूसा, कोकोपिट आते हैं जिनका उपयोग कर बड़े पैमाने पर कार्बनिक उपज प्राप्त कर सकते हैं।

4. **गुड़ाई एवं मिट्टी चढ़ाना-**टमाटर की फसल की प्रारम्भिक अवस्था में घास निकालने के साथ - साथ गुड़ाई कर दी जाती है। गुड़ाई कम से कम 2 - 3 बार की जाती है। प्रारम्भ की 2 गुड़ाई करने के बाद पौधों के तनों पर हल्की मिट्टी चढ़ा दी जाती है, जिससे पौधे मजबूती के साथ खड़े हो सके।

5. **पौधो को सहारा देना-**पौधों को सहारा देने से फल, मिट्टी व पानी के सम्पर्क में नही आते, जिससे पौध सड़न रोग से बचे रहते है। यही नहीं पोधों को सहारा देने से उत्पादन

में भी वृद्धि होती है और खेत में 50.0 प्रतिशत ज्यादा पौध रोपण की जा सकती है। सहारा देने के लिए 1.0 मीटर लम्बी व 2.5 सेन्टी मीटर मोटी लकड़ियों या बाँस के टुकड़ों के टमाटर के पौधों के साथ गाड़कर उन्हे 3 - 4 जगह बाँध देते हैं। असीमित बढ़वार वाली किस्मों को एंगिल आयरन के सहारे तार की मदद से ट्रेलिस (trellis) बनाकर उपर चढ़ाना चाहिए।

फलो की तुड़ाई

फलो को किस अवस्था में तोड़ा जाये, यह बाजार की दूरी एवं उपयोग पर निर्भर करता है। जब फल दूर बाजार में भेजने हों, तब अधपके अर्थात कुछ हरे या पीले फल तोड़ लिए जाते है। इस अवस्था के फल आसानी से पैक करके दूर के बाजार में भेजे जा सकते हैं तथा सड़ते नहीं। जब फल अच्छी तरह पक कर लाल हो जाते हैं, तब फलों की तुड़ाई नजदीक बाजार या घर के प्रयोग के लिए करते हैं। सामान्यतः टमाटर के फल परागण के 50 -60 दिन बाद पक जाते हैं लेकिन तापमान कम होने पर ज्यादा समय लग सकता है।

उपज

टमाटर की पैदावार मौसम, किस्म तथा भूमि के उपर निर्भर करती है। इसकी औसत उपज 25.0 - 30.0 टन प्रति हेक्टेयर होती है। कुछ संकर किस्में 50-80 टन प्रति हेक्टेयर उपज देती हैं।

भण्डारण

हरे परन्तु पूर्ण विकसित टमाटर को 10.0-15.0 डिग्री सेल्सियस पर 30 दिनो तक भण्डारित किया जा सकता है। पके फलों को 4.0 - 5.0 डिग्री सेल्सियस तथा 85-90 प्रतिशत आर्द्रता पर 10 दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है हिमिकरण तापक्रम (0 डिग्री सेल्सियस) पर भण्डारण करने से फल खराब हो जाते है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में टमाटर का सब्जियों में प्रमुख स्थान है। इस प्रकार यदि जैविक विधि द्वारा टमाटर की खेती की जाय तो मृदा के साथ-साथ हमारे स्वास्थ्य के लिये भी अच्छी होगी। यदि किसान टमाटर का जैविक विधि से उत्पादन करते हैं तो रासायनिक रहित सब्जियाँ ग्राहकों को मिलेगी। टमाटर पोषक तत्वों से भरपूर होता है। ऐसे में यदि जैविक विधि द्वारा टमाटर का उत्पादन किया जाय तो उसके पोषक तत्व बराकरार तो रहेंगे साथ ही रासायनिक दवाओं से होने वाले दुष्प्रभावों से हमें छुटकारा मिलेगा।

❖❖